L.N. MITHILA UNIVERSITY
DARBHANGA (BIHAR)
B.A PART - III
B.A PAPER - VII
PSYCHOLOGY (Honours)
PSYCHOPATHOLOGY
TOPIC - Humanistic Psychology and Existential Psychology.

Dr. Pramod Kumar Sahu,
Assistant professor,
Guest Teacher,
V.S.J. College, Rajnagar,
MADHUBANI (BIHAR)
pramodkumar.fbg2018@gmail.com

जैसा कि हम जानते है। मानवतावादी मनोविज्ञान तथा अस्तित्ववादी मनोविज्ञान दोनों को ही मनोविज्ञान के तृतीय बल (third force) में शामिल किया गया है। इन दोनों मनोविज्ञान में समानता यह है। इन दोनों में ही मानव प्रकृति की व्याख्या के लिए सम्पूर्ण जीव (whole organism) पर बल डाला गया है। इस सामान्य समानता (general similarity) के अतिरिक्त भी इन दोनों के कुछ असमानताएँ (similarities) हैं। जिनका वर्णन निम्नांकित है।

(i) दोनों ही मनोविज्ञानों में व्यक्ति की आन्तरिक संरचना, अनुभूतियाँ, प्रतिक्रियाएँ, भाव, संज्ञानात्मक क्षमताएँ आदि के अध्ययन पर तुलनात्मक समान रूप से बल डाला जाता है। इसलिए दोनों में आत्मनिष्ठता पर अधिक बल डाला गया है।

(ii) दोनों मनोविज्ञान की विधियाँ उपलक्षित है। अर्थात मनोविश्लेषक द्वारा व्यक्ति के आन्तरिक संरचना का अध्ययन एवं विश्लेषण करने के लिए घटना-क्रिया प्रधान विधि का उपयोग किया जाता है।

(iii) दोनों मनोविज्ञानों में व्यक्ति के स्वतंत्र इच्छाओं (free will) को महत्वपूर्ण माना गया है। दूसरे शब्दों में दोनों मनोविज्ञान ने व्यक्ति की वैयक्तिकता तथा अनोखेपन पर अधिक बल डाला गया है। इन दोनों मनोविज्ञान में यह मत जाहिर किया गया है। प्रत्येक व्यक्ति दूसरे से भिन्न होता है। तथा संसार के प्रति अपना स्वतंत्र विचार रखने के लिए पूर्णतः स्वतंत्र है।

(4) दोनों मनोविज्ञानों में यह मत जाहिर किया है कि प्रत्येक व्यक्ति को अपनी जीवन शैली चुनने की पूर्ण स्वतंत्रता होती है। इस स्वतंत्रता से व्यक्ति पर अपने आप यह उत्तरदायित्व हो जाता है कि वह अपने जीवन की अधिक संभावनाओं से जोड़ सके।

(v) चूँकि दोनों मनोविज्ञान में मनश्चिकित्सा (Psychotherapy) पर अधिक बल दिया है अतः दोनों से सम्बन्धित उपयोगी मनोविज्ञान के अध्ययन से रहे हैं। इन कारणों से व्यक्ति के प्रत्यक्षण में विकृति आ जाती है जिससे व्यक्ति की मनोवैज्ञानिक व्याख्या स्पष्ट हो जाती है। इन समानताओं के बावजूद इन दोनों मनोविज्ञानों में कुछ अन्तर है जो निम्नांकित है।

(i) मानवतावादी मनोविज्ञान व्यक्ति की आवश्यकता स्वाभिमान के आत्मसिद्धि की आवश्यकता पर अधिक बल देता है। अस्तित्ववादी मनोविज्ञान व्यक्ति के संसार में अस्तित्व रखने के रूप में उसके प्रकृति के अध्ययन पर अधिक बल डालता है।

(ii) मानवतावादी मनोविज्ञान सभी व्यक्तियों में उत्तम बनने की अन्तः शक्ति होने की कल्पना करता है। यही वजह है कि मानवतावादी का दृष्टिकोण अधिक आशावादी है। अस्तित्ववादी मनोविज्ञान का दृष्टिकोण ठीक इसके विपरीत है अर्थात् निराशावादी है। इसमें व्यक्ति की चिन्ताओं, डर, मृत्यु आदि जो व्यक्ति के अस्तित्व के नकारात्मक पक्ष हैं पर तुलनात्मक रूप से अधिक बल दिया जाता है। अस्तित्ववादी मनोविज्ञान का यह निराशावादी दृष्टिकोण फ्रायड के विचारों से काफी मिलती-जुलती है।

(iii) अस्तित्ववादी मनोविज्ञान में व्यक्ति के वर्तमान अस्तित्व पर ही अधिक बल डाला गया है। इतना अधिक बल मानवतावादी मनोविज्ञान में व्यक्ति के वर्तमान अस्तित्व पर नहीं दिया गया है।

(iv) अस्तित्ववादी मनोविज्ञान तथा मानवतावादी मनोविज्ञान में अभिप्रेरण (motivation) की व्याख्या के दृष्टिकोण से भी अन्तर है। मानवतावादी मनोविज्ञान में आत्म-सिद्धि या आत्म-पूर्ति (self-fullfillment) की प्रक्रिया को महत्वपूर्ण माना गया है जबकि अस्तित्ववादी मनोविज्ञान में व्यक्ति की जिन्दगी के आध्यात्मिक अर्थ (spiritual meaning) की खोज पर अधिक बल दिया गया है।

स्पष्ट हुआ कि अस्तित्ववादी मनोविज्ञान जहाँ एक ओर कुछ बिन्दुओं पर मानवतावादी मनोविज्ञान के

समान है, तो इससे और वह उसके कुछ बिन्दु भी पर मिल जाता है।

अस्तित्ववादी मनोविज्ञान की आलोचना कई आधारों पर किया गया है। आलोचकों के विरुद्ध निम्नांकित है।

(I) कुछ आलोचकों का मत है कि अस्तित्ववादी मनोविज्ञान ने मनोविज्ञान की दार्शनिक अनुमान तथा रिपोर्टरहित अंदाज के सम्मान से खेल में लिया दिया है। जो मनोविज्ञान के वैज्ञानिक एवं प्रयोगात्मक स्वरूप के विपरीत है। अस्तित्ववादी मनोविज्ञान में वस्तुनिष्ठ विधि तथा नियम की कमी है। इस तरह की वस्तुनिष्ठता के अभाव में आधुनिक युग में जहाँ प्रयोगात्मक विज्ञान पर अधिक-से अधिक बल दिया जाता है। अस्तित्ववादी मनोविज्ञान के स्वरूप को स्वीकार करना सम्भव नहीं है। आलोचकों का मत है कि अस्तित्ववादी की पहचान के साथ मनोविज्ञान ने अपना चक्र (cycle) पूरा कर लिया है। मनोविज्ञान पुनः से सभी आत्मनिष्ठता से प्रारंभ होकर प्रयोगात्मक एवं वस्तुनिष्ठ मनोविज्ञान से होते हुए पुनः आत्मनिष्ठ मनोविज्ञान पर आ गया है।

(II) व्यवहारवादियों तथा सम्बन्धित प्रयोगात्मक मनोवैज्ञानिकों ने स्पष्टतः यही दावा प्रस्तुत किया है कि अस्तित्ववादी मनोविज्ञान में आत्मनिष्ठता, द्वैतवाद तथा वस्तुनिष्ठ उपागमों की उपेक्षा किया है। इसके अन्तर्निरीक्षण की पारम्परिक विधि से मिलती-जुलती है। अतः अस्तित्ववादी मनोविज्ञान को वैज्ञानिक मनोविज्ञान के प्रतिनिधि के रूप में स्वीकृत करना सम्भव नहीं है।

(III) मानव प्रकृति तथा व्यक्ति की आन्तरिक अवस्थाओं की व्याख्या करने में अस्तित्ववादी मनोविज्ञान ने कुछ अस्पष्ट एवं अनुपयुक्त भाषा का उपयोग किया है। इसके परिभाषित व्याख्या इतना जटिल है कि उससे कोई स्पष्ट तस्वीर व्यक्ति के मन में नहीं उभरता है।

Scanned with CamScanner

जैसाकि एक जर्मन व्यक्तित्ववादी थे, इनके अनुसार व्यक्ति के व्यक्तित्व के तीन प्रमुख तत्व हैं। विचार की एक तात्कालिकताओं के होते हैं। भिन्न-व्यक्ति अपने जीवन में जान पाता है। विशेष वह वैयक्तिक तात्कालिक व्यक्तिगत व्यक्तित्व की पूर्णता की ओर के रूप अपने किसी एवं पसन्दों के अनुरूप होने की क्षमता से होते हैं। चिन्तन एक के तात्कालिक अनुभवातीत विचार के होता है। इनका मत था कि व्यक्ति अपने वास्तविक प्रकृति के बारे, अवगत नहीं होता है। क्योंकि वह अपनी स्वतंत्रता तथा विकल्पों के प्रति अवगत रहता है। व्यक्ति हमेशा मृत्यु के आतंक के बोध विचार अनावृत रहता है जब व्यक्ति मृत्यु के बोध विचार करके भी समझ ले पाता है तो उसका व्यक्तित्व पूर्ण रहता है। विचार में सामाजिक सम्बन्ध पूर्ण होते हैं। जिसमें वह समाज एवं लोगों के बोध अतः विचार करता है।

व्यक्तित्ववादियों के विचारों के अस्तित्ववादी मनोविज्ञान का धीरे-धीरे प्रादुर्भाव हुआ- जिसका मूल तत्व यह है कि व्यक्ति अपने अस्तित्व के भली-भाँति परिचित होता है तथा यह वह जानता है कि जब उसका अस्तित्व समाप्त हो जायेगा तो क्या होगा।।

Dr. Premoday kumar Sahu,
Date- 13/09/2020
Sem, IV systems of psychology